शान्ति मन्दिर द्वारा प्रकाशित यह ई-पत्रिका आप सबको समर्पित है ।

सिद्ध मार्ग

© Shanti Mandir अप्रैल २०१३ संस्करण १२

कभी कभी कथाएँ लोगों को सुनाता हूँ तो मैं सोचता हूँ कि बहुत अच्छी बातें हैं जो लोगों ने बाबाजी के साथ रहकर उनसे कुछ ग्रहण किया, समझा ।

प्रिय आत्मन्, सप्रेम जय गुरुदेव! सिद्ध मार्ग ई-पत्रिका का बारहवाँ अंक प्रस्तुत है । इस अंक में गुरुदेव महामण्डलेश्वर स्वामी नित्यानन्द जी द्वारा कुछ समय पूर्व दिल्ली में दिये गये प्रवचन के सम्पादित अंश प्रस्तुत हैं ।

"श्रीगुरुदेव का प्रवचन"

बाबा जी के बारे में कल मैंने काफ़ी कुछ सुनाया । कभी कभी कथाएँ लोगों को सुनाता हूँ तो मैं सोचता हूँ कि बहुत अच्छी बातें हैं जो लोगों ने बाबाजी के साथ रहकर उनसे कुछ ग्रहण किया, समझा । कभी-कभी कोई-कोई लोग इतनी हवा में बातें करते हैं वो सुनकर मैं भी अचम्भित होता हूँ क्योंकि बाबाजी के साथ काफ़ी रहे तो काफ़ी कुछ पता है, देखा है,जानते हैं । तो मैं सोचता हूँ लोग ऐसा क्यों करते हैं । मुम्बई में जब पतंग उड़ाने का समय आता है तो जो पतंग उड़ाने की रस्सी होता है उसे हम मांजा बोलते हैं, यहाँ भी मांजा बोलते हैं । जब पतंग ऊपर भेजनी होती है तब कहते हैं कि ढील दे, ढील दे यानी मांजा को छोड़ दे तभी पतंग ऊपर जायेगी । तो जब हम छोटे थे और कोई ऐसा हवा में बातें छोड़ता था तो हम

हमें स्पष्ट तथा सत्य बोल कर सत्य के मार्ग पर चलने वाला होना चाहिए ।

बोलते थे कि ढील दे ढील दे मतलब पता होता था कि इस बात मे कोई भी रहस्य या तथ्य नहीं है, कोई वास्तविकता नहीं है । अगर सामने वाला भी उसी सामने वाले की तरह अविवेकी हो, यानी कि ढील देने वाला हो तो दोनों आपस में वाह! वाह! करते हैं । कभी कभी हमारे अशोक और तुषार बोलते हैं कि आज तो इसने छक्का मारा । तो इस यात्रा पे मैंने कहा कि चौका छक्का वाले तो बहुत हो ही गये हैं परन्तु आज कल तो दस वाले भी मिलते हैं । मतलब किसी का विनोद नहीं कर रहा हूँ, न कुछ कह रहा हूँ । बाबा जी से ये सीखा है कि हमको प्रेक्टिकल होना चाहिए, प्रेक्टिकल यानी कि क्या ? हमें स्पष्ट तथा सत्य बोल कर सत्य के मार्ग पर चलने वाला होना चाहिए । हम परसों पटियाला में थे तो हमारे आचार्य मंगलानन्द जी महाराज ने सत्य के ऊपर भी व्याख्या की कि हमारे यहाँ कितने प्रकार के सत्य बताये गये हैं । कभी कभी कोई मनुष्य अपनी बात पर अड़ जाता कि बस मैं ऐसा ही करूँगा । परन्तु गीता वाक्य को लेकर उन्होंने कहा- सत्यं प्रिय हितः। कि सत्य ऐसा होना चाहिए कि सामने वाले को सुनने में भी अच्छा लगता हो तथा हित कर भी होना चाहिए । अगर ऐसा नहीं है तो बोलो ही मत । परन्तु कभी कभी लोग सोचते हैं कि चलेगा । किसी ने कहीं कहा कि प्रोत्साहन देना चाहिए तो प्रोत्साहन देने की ढील देने की आवश्यकता नहीं । मैं मानता हूँ हमे बाबा जी ने बहुत प्रोत्साहन दिया परन्तु उनका प्रोत्साहन कभी असत्य नहीं था । आशा है कि आप मेरी बात को समझते हो । मधु जी ने कहा कि बाबाजी के बारे कुछे कहो, तो बाबा जी को लेकर ये

बाबाजी पूरे चालीस वर्ष अग्नि के ऊपर तपे और उसके बाद भी मैं मानता हूँ धीरे -धीरे ऊपर आये ।

सब बातें कह रहा हूँ । जीवन के बीस वर्ष उनके सन्निध्य में, उनके साथ बिताये हैं । नरेश भाई ने कहा कि हम अटक जाते हैं । कि गुरु से मिले हैं, मन्त्र लिया है, हमको अभी बस साक्षात्कार हो जाना चाहिए, ध्यान हो जाना चाहिए, जो बाबाजी ने चित्शक्ति विलास में लिखा है वैसा ही मेरा अनुभव हो जाना चाहिए । और कई लोग यहाँ सत्संग में आते आते बोल देते हैं बस हो गया, परन्तु आप बाबाजी के बारे में विचार कीजिए, पन्द्रह वर्ष की आयु में घर छोड़ कर पच्चीस वर्ष भारत भ्रमण किया, फिर सद्गुरु से दीक्षा प्राप्त करके नौ वर्ष और साधना की । यानी पूरे चौंतीस वर्ष लगे और फिर गुरु के पास रहकर, यानि बाबाजी गाँवदेवी रहते थे तथा उनके गुरुदेव गणेशपुरी में रहते थे, तकरीबन पाँच से छः वर्ष उनके सान्निध्य में रहे । उन दिनों शिष्य बनकर रहे, गुरु बन कर नहीं । १९६१ अगस्त में जब बड़े बाबा भगवान् नित्यानन्द जी ने समाधि ली, तत्पश्चात् वो स्वामी मुक्तानन्द धीरे-धीरे बाबा मुक्तानन्द बने तो आप सोच सकते हैं कि बाबाजी पूरे चालीस वर्ष अग्नि के ऊपर तपे । उसके बाद भी मैं मानता हूँ धीरे-धीरे ऊपर आये । आज हम चाहते हैं कि मैं अभी मिला हूँ, शिवरात्री तक मेरा सब काम हो जाना चाहिए । रविवार को अपनी जो भी कॉन्ट्रेक्ट गॉरन्टी करा दूँ कि महाशिवरात्री १६ की है सत्रह की सुबह पूर्णाहुती है अपना सब काम हो जाना चाहिए । क्योंकि नहीं होगा तो टीवी पर देख लूँगा कि और किसके पास जाऊँ । बात सच है कि हम मेंढक की तरह हो जाते हैं, कभी इधर कूदते हैं तथा कभी उधर, तो साधक को कभी ऐसे मेंढक

साधक स्थिर हो जायें, एक जगह पर पक्के हो जायें, और फिर धीरे धीरे अग्रसर होते रहें ।

की तरह नहीं करना चाहिए । साधक स्थिर हो जायें, एक जगह पर पक्के हो जायें, और फिर धीरे धीरे अग्रसर होते रहें । आप हमारे विद्यार्थियों को देखते हैं, मैं इनसे यही प्रार्थना करता हूँ कि वो टिके रहें क्योंकि अगर यही विद्यार्थी हरिद्वार में रहते तो हमारे आश्रम के नियम पालन करना तो मुश्किल है, तो सोचते बगल का आश्रम अच्छा है क्योंकि शान्ति मन्दिर में तो पाँच बजे उठना पड़ता है, बगल वाले तो सात बजे उठते हैं और कहीं और जाओ तो आठ बजे उठते हैं । और शान्ति मन्दिर में तो दस बजे गेट भी बन्द हो जाते हैं । बाहर तो अगर आप बारह बजे आते हैं, तो दरवाजा खटखटाओ तो कोई खोल देता है, पूँछता भी नहीं कि कहाँ गये थे, क्यों गये थे, क्या किया । तो एक धैर्य होता है, एक धृति होती है हमें अपने जीवन में । सद्गुरु के पास जब हम जाते हैं तो सबसे पहले एक धैर्य होना चाहिए, भले कुछ भी बोलें, कुछ भी मुझे सुनायें । अगर हमने उनको गुरु माना है तो हमारे अन्दर एक धैर्य होना चाहिए । और फिर हमारी धृति भी होनी चाहिए । भगवान् श्रीकृष्ण ने सात्त्विक, राजसिक, तामसिक तीन प्रकार की धृति भगवद्गीता में बतायी है । वह धृति भी ऐसी होनी चाहिए कि हम वहाँ उस मार्ग पर बने रहें और मन इधर उधर न जाये, हम अपने लक्ष्य पर लगे रहें । जब हम बाबा की सेवा करते थे तो मैं मानता हूँ वो हमारी ऐसी काफ़ी परीक्षा लेते थे कि इसका धैर्य कितना है, इसकी धृति कितनी है, कितना ये बना रहेगा क्योंकि आदमी अगर कच्चा होता है तो भाग जाता है, वो सोचता है क्या करना है, क्यों उठना है, ये किस लिए है ? जैसे जीवन में मनुष्य आडम्बर से जीता

सद्गुरु के पास रहने से मैं मानता हूँ कि जो बाह्य आडम्बर है उसे धीरे धीरे त्यागना पड़ता है और गुरु वैसा ही कार्य करते हैं, साधना देते हैं कि वो सब छोड़ना पड़ता है।

है, बाह्य आडम्बर उसके बहुत होते हैं और वास्तविक अन्तर में जब हम देखते हैं तो अन्तर से कुछ और निकलता है । सद्गुरु के पास रहने से मैं मानता हूँ कि जो बाह्य आडम्बर है उसे धीरे धीरे धीरे त्यागना पड़ता है और गुरु वैसा ही कार्य करते हैं, साधना देते हैं कि वो सब छोड़ना पड़ता है। और वो जब छूटेगा तभी जाकर हम जो वास्तविक सत्य है, जो मैं हूँ यानी जो आत्मा है उसका हम अनुभव करते हैं । समय की कल मैंने थोड़ी सी चर्चा की थी । भारत में समय की बहुत विशेषता है और पञ्चाङ्ग देखकर हम चलते है। तो विदेश में मुझे लोग कई बार पूछते है कि तुम्हारे देश में पञ्चाङ्ग की विशेषता बहुत है, समय की विशेषता बहुत है परन्तु कोई भी समय पर कार्य नहीं करता । क्या मैं असत्य बोल रहा हूँ या सत्य ? एक माता अमेरिका की यहाँ आयी हुई थी । हर मन्दिर मेंवो यात्रामें हमारे साथ आई हुई थी- बद्रीनाथ,केदारनाथ सब घूम के और इधर-उधर घूम के अन्त में मुझे शायद अमेरिका में उसने मुझे पूछा कि हर मन्दिर में, हर देवता के पास इतनी बड़ी घड़ी लगी होती है और आगे उसने मुझे कुछ कहा नहीं, मैं समझ गया ये चाहती है कि मैं कुछ बोलूँ । मैं बोला वो इसलिए लगी रहती है कि पुजारी को मालूम पड़े कि आरती का समय कब है । हालांकि मैं मानता हूँ कि जो लोग बाबा से जुड़े हैं, सिद्धयोग से जुड़े हैं, फिर भी हम समय से चलते हैं । जैसे यहाँ एक बहुत अच्छी प्रथा है, जब सत्संग होता है, तो लोग सत्संग में आकर बैठ जाते हैं, और सत्संग जब तक पूरा नहीं होता है तब तक बैठे रहते हैं । विशेष रूप से पंजाब में भ्रमण किया तो

एक बार तुमने किसी गुरु को अथवा मार्ग को अपनाया है, फिर वहाँ निरन्तर लगे रहना चाहिए ।

सत्संग चलते चलते कोई बीच में आयेगा, कुछ प्रवचन चल रहा है, कोई बोल रहा उसकी परवाह नहीं, नमस्कार करेंगे, कुछ चढ़ायेंगे, जितने फोटो हैं उनको नमन करेंगे और थोड़ी देर बैठेंगे और चले जायेंगे । वो सोचेगा अपना हो गया, जो व्यासपीठ पर थे उनको नमन कर लिया और सुनने की कोई आवश्यकता नहीं । सुनना है तो दो मिनिट बैठ जाते हैं, उनको लगता है ये क्या सुनना, ये सब तो सुनी हुई बातें हैं, चलेगा । तो ऐसे लोग क्या कहते हैं- बहुत सत्संग में हम जाते हैं, बहुतों को हमने नमन किया है लेकिन मिला कुछ नहीं । ये मेंढक वाली बात हो गयी न, इधर कूदा, उधर कूदा, इधर इसके पास गये, उधर उसके पास गये, पर आप उससे किसी के बारे में कुछ पूछो तो सब ज्ञान होगा, परन्तु जो ज्ञान होना चाहिए, वो ज्ञान होता ही नहीं । तो उसके लिए महाराज जी बहुत कहते थे- कि एक बार तुमने किसी गुरु को अथवा मार्ग को अपनाया है, आपने परीक्षा करके, जाँच करके, जानकारी लेकर उसको जब तुमने अपनाया है, फिर वहाँ निरन्तर लगे रहना चाहिए । वहाँ जो अभ्यास, साधना, ज्ञान आदि जो कुछ भी प्रथा है उसको पूर्ण रूप से समझिये, और जैसे धीरे धीरे वहाँ की जो प्रक्रिया है उसको करोगे तो उसका फल लाभ देगा। आज हम देखते हैं, बाबाजी को यहाँ दिल्ली आते हुए चालीस वर्ष हो गये, जो निरन्तर करते रहे, लगे रहे, उनके अन्तर में उनको कुछ प्राप्ति हुई होगी । चाहे वो व्यक्त नहीं कर सकते हों या हम समझ नहीं सकते परन्तु उन्हें देखने से लगता है इन्होंने कुछ तो अपने जीवन में पाया है । और मैं मानता हूँ

जब तक अपने प्रयास, पुरुषार्थ से अपने मन को स्थिर नहीं करेंगे तब तक मैं मानता हूँ, मेरा अपना अनुभव है, कि हम आगे नहीं बढ़ पायेंगे ।

जो साधक अच्छी साधना करता है, सबसे पहले तो वो स्थिरता प्राप्त करे, क्योंकि जब तक हम स्थिर नहीं होते, तब तक हमारी चंचलता दूर नहीं होती । तब तक हम वो कूदने वाले मेंढक हैं । यानि हमारा मन बिल्कुल भी स्थिर हुआ नहीं है, वो मन स्थिर होना चाहिए । मन जब स्थिर होगा तो बाकी फिर सब धीरे धीरे धीरे स्थिर हो जायेगा । और जब तक अपने प्रयास, पुरुषार्थ से अपने मन को स्थिर नहीं करेंगे तब तक मैं मानता हूँ, मेरा अपना अनुभव है, कि हम आगे नहीं बढ़ पायेंगे । हम पढ़ सकते हैं, हम प्रवचन दे सकते हैं, हम लोगों को बहुत कुछ बातें बता सकते हैं, समझा सकते हैं, परन्तु हमारे अन्तर में सन्तोष नहीं, तृप्ति नहीं, पूर्णता नहीं क्योंकि मन भटक रहा है । तो सबसे पहले मैं आप लोगों से ये निवेदन करूँगा कि ढील देना छोड़ दो, उसकी कोई आवश्यकता नहीं । मैं यही कहूँगा जो आप बोलते हो उस में सत्यता लाओ ।

"सद्गुरु नाथ महाराज की जय"